सबद रचना

सबद रचना के नीचे लिखल ***पाँच बिधि*** मानल जा हे :

1. उपसर्ग
2. प्रत्यय
3. सन्धि
4. समास
5. पुनरुक्ति

ई अध्याय में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आउ पुनरुक्ति के परिचय देवल जायत।

उपसर्ग : उपसर्ग ऊ सबदांस हे जे कोई सबद के पहिले लग के ओकर स्वरूप आउ अर्थ में परिवर्तन ला देवऽ हे। **जइसे** : मूल सबद 'जोग' में सं, बि, सु आउ कु उपसर्ग लगाके क्रमसः संजोग, बियोग, सुजोग आउ कुजोग सबद बनावल जा हे।

उपसर्ग के कइएक बिसेसता होवऽ हे। **जइसे** :

1. स्वतंत्र रूप से एकर परयोग न होवे।
2. सबद के पहिले लग के ही ई अर्थवान हो हे।
3. उपसर्ग के जोग से कभी तो सबद के अर्थ में एगो नया बिसेसता आ जा हे आउ कभी न भी आवे। जइसे भ्रमन के अर्थ में परि उपसर्ग लगैला पर भी कोई परिवर्तन न होवे।

मगही के जादेतर उपसर्ग संस्कृत उपसर्ग के अपभ्रंस हे जे तद्भव सबद के पहिले लगल हे। संस्कृत के उपसर्ग के परयोग संस्कृत के तत्सम सबद के जोरे आउ उर्दू के उपसर्ग के परयोग उर्दू सबद के जोरे करके मगही में परयोग कैल जा हे।

कुछ प्रमुख उपसर्ग आउ ओकरा से बनल सबद के सूची नीचे देल जाइत हे :

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उपसर्ग	अर्थ	बनल सबद
अ	निसेध	अकाल, अचक्का, अचेत, अथाह, अनजान, अनपढ़, अबोध,अभाव, अलग आदि।
अध	आधा	अधकचरा, अधकपारी, अधसिझु, अधमरल आदि।
अन	निसेध	अनगढ़, अनगिनती, अनजान, अनदेखल, अनचाहल, अनपढ़, अनबल, अनठेकान आदि।
उन	एक कम	उनइस, उनसठ, उनचालीस आदि।
औ	हीन, निसेध	औगुन, औघट, औसर आदि।
क	बुरा	कपूत, करसी आदि।
कु	बुरा	कुकर्म, कुढंग, कुदिन आदि।
दु	बुरा	दुबर, दुशासन, आदि।
दुर्	बुरा	दुर्दिन, दुर्नाम, दुर्भाग्य आदि।
नि	कभी, निसेध, रहित	निकम्मा, निगोरा, निडर, निहत्था आदि।
बिन	बिना	बिनकरनी, बिनदेखा, बिनकैल, बिनबिआहा आदि।
भर	पूरा	भरदिन, भरपेट, भरपूर, भरसक आदि।
स	अच्छा, साथ	सपूत, सहित, समेत आदि।
सु	अच्छा	सुघड़, सुजस, सुदिन, सुमंगली आदि।
सौ	अच्छा	सौभाग्य आदि।

संस्कृत के तत्सम सबद में संस्कृत उपसर्ग जोड़ के बनावल सबद के उदाहरन :

अति	अधिक	अतिकाल, अत्याचार, अतिशय, अत्यन्त आदि।
अधि	उपर, समीपता	अधिक, अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष आदि।
अनु	क्रम, बाद	अनुकूल, अनुचर, अनुज, अनुपात, अनुसासन, अनुवाद आदि।
अप	हीनता, अभाव	अपकार, अपयस, अपमान, अपवाद, अपराध आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उपसर्ग	अर्थ	बनल सबद
अभि	निकटता, ओर इच्छा, अधिकता	अभिमान, अभ्युदय, अभिप्राय, अभ्यास, अभियोग, अधिकता, अभिलाषा आदि।
अव	हीनता, दशा	अवगत, अवतार, अवनति अवलोकन, आजन्म, आमरन, आरंभ, आशक्त आदि।
आ	विपरीत, समेत, ओर	आक्रमण, आगमन, आचरण, आजीवन, आजन्म, आमरण, आरंभ, आरक्त आदि।
उत्, उंद्	ऊपर, प्रगति	उत्कर्ष, उद्यम, उद्धत, उत्तम, उत्पन्न, उत्साह, उद्गार आदि।
उप	समीप, समान, हीन	उपकार, उपदेश, उपनाम, उपभेद, उपवन, उपमंत्री, उपस्थित, उपासना आदि।
दुर्, दुस्	बुरा, कठिन	दुष्कर्म, दुर्गम, दुराचार, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्लभ, दुस्साहस आदि।
नि	नीचे, बाहर	निमन, निम्न, निवारन, निवास, निषेध आदि।
निर्, निस्	निषेध, रहित	निर्जीव, निर्भय, निदोर्ष, नीरोग, निर्मल, निरपराध, निर्वाह आदि।
परा	अनादर, नाश	पराक्रम, पराजय, पराभव, परास्त, आदि।
परि	चारो तरफ, त्याग, पूर्ण	परिक्रमा, परिचय, परिजन, परिदोष, परिवर्तन, परिणाम, परिमाण आदि।
प्र	ऊपर, आगे, गति, अधिक, यश	प्रचार, प्रमाण, प्रपंच, प्रभाव, प्रबल, प्रलय, प्रसिद्ध, प्रयोग, प्रसार, अधिक, प्रलाप आदि।
प्रति	हरेक, बराबरी, विरोध	प्रतिकूल, प्रतिदान, प्रतिनिधि, प्रत्येक, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण आदि।
सम्	संयोग, पूर्णता	संस्कार, संस्कृत, संकल्प, संगम, संग्राम, सम्मुख, सम्मेलन, संतोष, संन्यास, संयोग आदि।
सु	अच्छा, सुखी	सुकर्म, सुगम, सुजन, सुवास, सुलभ आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उर्दू उपसर्ग

अल	निश्चित	अलगरज, अलबत्ता
ऐन	ठीक	ऐनमौका, ऐनवक्त
कम	थोड़ा	कमउम्र, कमखर्च, कमजोर, कमसिन, कमबखत आदि।।
खुश	अच्छा	खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशदिल, खुशनसीब, खुशमिजाज, खुशगवार आदि।
गैर	भिन्न, निषेध	गैरकानूनी, गैरवाजिब, गैरहाजिर, गैरसरकारी आदि।
दर	वास्तव में	दरकार, दरअसल, दरमियान, दरहकीकत आदि।
ना	अभाव, तुच्छ	नाचीज, नाराज, नादान, नालायक, नासमझ आदि।
बा	साथ	बाअदब, बाकलम, बाकायदा आदि।
ब	अनुसार	बतौर, बदौलत, बनाम आदि।
बद	बुरा,	बदकिस्मत, बदबू, बदनाम, बदमाश, बदनीयत, बदहवास आदि।
बे	बिना, बहुत	बेइमान, बेहतर, बेशुमार, बेलगाम, बेहद आदि।
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापता, लापरवाह आदि।
सर	प्रधान	सरताज, सरपंच, सरदार, सरहद आदि।
हम	समान	हमजोली, हमदर्द, हमदम, हमसफर, हमसाया आदि।
हर	हरेक	हरघड़ी, हरदम, हररोज, हरतरफ, हरसाल आदि।

उर्दू के कुछ उपसर्ग जे मगही सबद जउरे लगावल जा हे :

बे	निषेध	बेकल, बेजोड़, बेचैन आदि।
सर	मुख्य	सरकार, सरफिरा आदि।
हर	प्रत्येक	हरएक, हरदिन, हरकोई आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

प्रत्यय

प्रत्यय के परिभासा : प्रत्यय ऊ सबदांस हे, जे कोई सबद के अन्त में लग के ओकर स्वरूप आउ अर्थ में परिवर्तन ला दे हे।

जइसे :

सबद	प्रत्यय	बनल सबद
चल	अन	चलन
बात	अक्कड़	बतक्कड़
देख	आवट	देखावट
मिल	आवट	मिलावट

मुख्य रूप से प्रत्यय ***दू प्रकार*** के होवऽ हे :

1. कृत् प्रत्यय 2 तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय : क्रिया इया धातु के अन्त में लगेवाला प्रत्यय के कृत् प्रत्यय कहल जा हे आउ ओकर जोग से बनल सबद के कृदन्त कहल जा हे। एकरा से क्रिया इया धातु के, सबद के नया रूप मिल जा हे। कृत् प्रत्यय से 'संग्या' आउ 'बिसेसन' बनऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	सबद
हार	होना	होनहार
वैया	रख	रखवैया (संग्या)
अक्कड़	भूलना	भुलक्कड़ (बिसेसन)
आलू	झगड़ना	झगड़ालू (बिसेसन)

क्रिया पद के अन्त में कृत् प्रत्यय के मेल से चार प्रकार के संग्या बनऽ हे :

(क) करतरीवाचक (ख) कर्मवाचक (ग) करनवाचक (घ) भाववाचक

(क) **करतरीवाचक संग्या :** प्रत्यय के मेल से निरमित जउन कृदन्त संग्या से कर्त्ता के बोध होवऽ हे ओकरा करतरीवाचक संग्या कहल जा हे। क्रिया में प्रत्यय लगा के एकरा अइसे बनावल जा हे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक संग्या
अक	गाना	गायक
वैया	लिखना, गाना	लिखवैया, गवैया

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक संग्या
री	काटना	कटारी
अन	गह	गहन
आ	भूँजना	भूँजा
स्थ	गृह	गृहस्थ
इया	धुनना, लखना	धुनिया, लखिया
एरा	लूटना	लुटेरा
का	उचकना	उचक्का

करतरीवाचक बिसेसन : करतरीवाचक बिसेसन बनावे ला धातु इया क्रिया में प्रत्यय लगावल जा हे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक बिसेसन
आऊ	टिक्, जड़्	टिकाऊ, जड़ाऊ
आक	तैर्	तैराक
आकू	लड़्, उड़्	लड़ाकू, उड़ाकू
आड़ी	खेल्	खेलाड़ी
आलू	झगड़्	झगड़ालू
इया	बढ़्, घट्	बढ़िया, घटिया
इयल	अड़्, मर्	अड़ियल, मरियल
ऐत	डाका	डकैत
वाला	पढ़्	पढ़ेवाला
ओड़	हँस्	हँसोड़
अक्कड़	पी, भूल्	पियक्कड़, भुलक्कड़
आवन	सुहा, लुभा	सुहावन, लुभावन
सार	मिलन	मिलनसार
हार	रखन	राखनहार

(ख) **कर्मवाचक संग्या :** प्रत्यय के जोग से बनल जउन कृदन्त से कर्म के बोध होवऽ हे, ओकरा कर्मवाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जइसे :

प्रत्यय	क्रिया/धातु	कर्मवाचक संग्या
ना	ओढ़	ओढ़ना
नी	चाट	चटनी
औना	खेल	खिलौना

(ग) **करनवाचक संग्या** : प्रत्यय के मेल से बनल जउन कृदन्त संग्या से करन के ग्यान होवऽ हे, ओकरा करनवाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे।

जइसे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करनवाचक संग्या
आ	ठेल्, झूल,	ठेला, झूला
आनी	मथ्	मथानी
ई	खेते, रेत	खेती, रेती
ऊ	झाड़ू	झाड़ू
औटी	कस्	कसौटी
न	बेल	बेलन

(घ) **भाववाचक संग्या** : प्रत्यय के मेल से बनल जउन कृदन्त संग्या से भाव के बोध होवऽ हे, ओकरा भाववाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	भाववाचक संग्या
अंत	गढ़्	गढ़ंत
अ	फेर् घेर्	फेर, घेर
आ	जौड़्	जोड़ा
आई	पढ़	पढ़ाई
आन	उठ्	उठान
आप	मिल्	मिलाप
आव	लग्	लगाव

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

2. तद्धित प्रत्यय : तद्धित ऊ प्रत्यय हे, जे संग्या इया बिसेसन के अन्त में लगावल जा हे। तद्धित प्रत्यय के जोग से बनल सबद के 'तद्धितान्त' कहल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	क्रिया	तद्धितान्त रूप
आई	पंडित, उँचा	पंडिताई, ऊँचाई
पना	लड़का, पागल	लड़कपना, पागलपना

तद्धित प्रत्यय के कई रूप होवऽ हे :

(क) **भाववाचक संग्या** : भाववाचक तद्धितीय प्रत्यय नीचे लिखल हे :

प्रत्यय	संग्या	तद्धितान्त रूप
आ	बोझ, बजाज	बोझा, बजाजा
आई	पंडित	पंडिताई
आन	धड़	धड़ान
आइन	दूध	दुधाइन
पा	बूढ़ा	बुढ़ापा

(ख) **करतरीवाचक संग्या** : संग्या के अन्त में तद्धित प्रत्यय लगा के करतरीवाचक तद्धित संग्या बनऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	सबद	तद्धितान्त रूप
आर	लोहा	लोहार
आरी	खेल	खेलारी
इया	दुख	दुखिया
ई	तेल	तेली
एरा	लूट	लुटेरा
एड़ी	गाँजा	गँजेड़ी

(ग) **ऊनवाचक संग्या** : ऊनवाचक संग्या से पदार्थ के छोटापन, हीनता आदि भाव परगट होवऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	सबद	तद्धितान्त रूप
आ	बाबू	बबुआ
ई	टोकरा	टोकरी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

इया	लोटा	लोटिया
ओला	खाट	खटोला
ड़ा	चाम	चमड़ा
क	ढोल	ढोलक

(घ) **अपत्यवाचक (संतानवाचक) संग्या** : अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय के परयोग प्रायः संस्कृत नियन होवऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
अ	मनु	मानव
इ	दसरथ	दासरथि
ई	दयानंद	दयानंदी
एय	राधा	राधेय

(ङ) **सम्बन्धवाचक संग्या** : संग्या के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़ के सम्बन्धवाचक संग्या बनावल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
हाल	नाना	ननिहाल
औती	बाप	बपौती
जा	भाई	भतीजा
एल	नाक	नकेल
आल	ससुर	ससुराल
औटी	चूना	चुनौटी

(च) **गुनवाचक बिसेसन** : गुनवाचक बिसेसन में प्रत्यय जोड़ के अइसे बनऽ हे :

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
आ	भूख	भूखा
आलू	झगड़ा	झगड़ालू
ई	देहात	देहाती

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

इक	वर्ष	वार्षिक
ईला	रंग	रंगीला
इया	पटना	पटनिया
ऊ	बाजार	बाजारू

समास

परिभासा : जब दू इया दू से अधिक सबद अप्पन बीच के बिभक्ति–चिह्न के छोड़ के एक साथ मिल जा हे, तो ओकर मेल के 'समास' कहल जा हे। **जइसे :**

पूजाघर	=	पूजा के घर,
देसभक्त	=	देस के भक्त,
गंगाजल	=	गंगा के जल,
बिद्यालय	=	बिद्या के घर,

समास के ***छौ भेद*** होवऽ हे :

1. तत्पुरुस,
2. कर्मधारय,
3. द्विगु,
4. बहुब्रीहि,
5. द्वन्द्व
6. अब्ययीभाव।

1. **तत्पुरुस समास :** जउन समास के अंतिम पद प्रधान होवऽ हे, ओकरा 'तत्पुरुस समास' कहल जा हे **जइसे :**

राजमंत्री नीमन राज चलावऽ हथ।

तत्पुरुस समास के भेद :

बिभक्ति के अनुसार तत्पुरुष समास के छौ भेद होवऽ हे। तत्पुरुस समास में पहिला पद में जउन बिभक्ति होवऽ हे, ओही बिभक्ति के नाम पर ओकर नामकरन होवऽ हे।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जइसे :

1. द्वितीया (कर्म तत्पुरुस), 2. तृतीया (करन तत्पुरुस), 3. चतुर्थी (सम्प्रदान तत्पुरुस)

4. पंचमी (अपादान तत्पुरुस), 5. सस्ठी (संबंध तत्पुरुस) 6. सप्तमी (अधिकरन तत्पुरुस)

1. **द्वितीया (कर्म तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के दूसर भेद कर्मकारक के 'के' (हिन्दी 'को') बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** पत्तलचटवा, घसगढ़नी, कठखोदवा, चुगलखोर आदि।

2. **तृतीया (करन तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के तीसरा भेद करन कारक के 'से' बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** जनामांधर (जन्म से अंधा), लतबन्दर (पैर से धाँगल), कनबहिरा, मनगढ़न्त आदि।

3. **चतुर्थी (सम्प्रदान तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के चौथा भेद सम्प्रदान के 'ला' 'लेल', आदि बिभक्ति के लोप रहऽ हे। जइसे:-धरमसाला (धरम ला घर), सीराघर (देवता ला घर) गोसाला (गाय ला घर इया बथान) आदि।

4. **पंचमी (अपादान तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के पचवाँ भेद अपादान के 'से', 'सेती' आदि बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** करमहीन (करम से हीन), जतकट्टा (जात से काटल), देसनिकालल (देस से निकालल) आदि।

5. **सस्ठी (सम्बन्ध तत्पुरुस)** एकरा में कारक के छठा भेद सम्बन्ध के 'के' बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** देबीथान (देबी जी के स्थान), बेलपत्तर (बेल के पत्ता), कन्यादान (कन्या के दान) अनकरासरा (दूसर के आसरा)

6. **सप्तमी (अधिकरन तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के सतवाँ भेद अधिकरन के 'में', 'पै', 'पर' बिभक्ति के लोप रहऽ हे । **जइसे :** घरघुमनी घर घर में घुमे ओली) गिरहीपरवेस, मँड़बज्जू (माँड़ में बभ्फल) आदि।

तत्पुरुस समास के अन्य भेद :

1. **उपपद तत्पुरुस** : जब तत्पुरुस समास के अंतिम पद अइसन कृदन्त होवऽ हे जेकर स्वतंत्र परयोग न हो सके, तब ओकरा 'उपपद तत्पुरुस समास' कहल जा हे। **जइसे :** तेलचट्टा, लकड़खोदवा, चिड़ीमार आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

2. **नञ् तत्पुरुस** : जउन तत्पुरुस समास के पहिला पद निसेधवाचक रहऽ हे, ओकरा 'नञ् तत्पुरुस समास' कहल जा हे। **जइसे** : अछूत, अबेर, अनजान, निरमोहा आदि।

2. **कर्मधारय समास** : जउन समास में बिसेसन–बिसेस्य इया उपमान–उपमेय के मेल होवऽ हे आउ बिग्रह कयला पर दुन्नो पद में एके कर्त्ताकारक के प्रथमा बिभक्ति आवे, तब 'कर्मधारय समास' कहला हे।

जइसे : नीलकमल – नील (बिसेसन), कमल (बिसेस्य)।

महात्मा – महान (बिसेसन), आत्मा (बिसेस्य)।

मुखकमल – मुख (उपमेय), कमल (उपमान)।

स्यामसुंदर, मृगनैनी, भवसागर आदि।

कर्मधारय समास के चार भेद होवऽ हे :

1. बिसेसतामूलक कर्मधारय, 2. उपमामूलक कर्मधारय,
3. मध्यमपदलोपी कर्मधारय 4. रूपक कर्मधारय।

1. **बिसेसतामूलक कर्मधारय** : एकरा में पहिला पद आउर बाद के पद के बीच बिसेसन-बिसेस्य-भाव रहऽ हे। **जइसे** : नीलगगन, स्वेतकमल, रक्तपुस्प आदि।

2. **उपमामूलक कर्मधारय** : एकरा में पहिल पद आउ बाद के पद के बीच उपमान–उपमेय भाव रहऽ हे। **जइसे** : सूरजमुखी, कमलनैनी, चन्द्रमुखी, घनस्याम आदि।

3. **मध्यमपदलोपी कर्मधारय** : जब सबद के पहिल पद आउ बाद के पद के बीच के, बिसेसन-बिसेस्य संबंध बनावे वाला पद के लोप रहऽ हे, ओकरा 'मध्यमपदलोपी समास' कहल जा हे। **जइसे** :

बैलगाड़ी (बैल से खींचल जाए वाला गाड़ी),

गोबरगनेस (गोबर से बनल गनेस)

बनमानुस (बन में रहे वाला मनुस्य)

गुरुभाई (गुरु के संबंध से भाई) आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

4. **रूपक कर्मधारय** : जउन कर्मधारय समास में उपमेय के उपमान मान लेवल जा हे, हुआँ 'रूपक कर्मधारय' हो हे। **जइसे** : कमलमुख, चरनकमल, ग्यानधन आदि।

3. **द्विगु समास** : जउन कर्मधारय पद के सुरू में संख्यावाची सबद होवऽ हे, ओकरा 'द्विगु समास' कहल जा हे। **जइसे** : चौराहा, तिमुहानी, अठवारा, एकटंगा, एकरंगा, नौग्रह, पंचवटी आदि।

उपरे के उदाहरन में पहिलका पद संख्यावाचक बिसेसन हे आउ समूचा सबद से कोई बस्तु के समूह के पता चलऽ हे।

4. **बहुब्रीहि समास** : जउन समास के कोइयो पद प्रधान न होवे आउ अप्पन समस्त पद से कोई खास अर्थ के बोध करावे, ओकरा 'बहुब्रीहि समास' कहल जा हे। **जइसे** : नीलकंठ–एकर दू पद–'नील' बिसेसन आउ 'कंठ' संग्या हे। एकरा से ई कर्मधारय समास होयल। बाकि जब दुन्नों पद से प्राप्त अर्थ के बोध न हो के, एगो अन्य या दोसर अर्थ–'महादेव जी' के बोध होयत, ई लेल ई बहुब्रीहि समास कहलायत।

बहुब्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरन :

लम्बोदर : (लम्बा हे उदर जेकर), बिसेस अर्थ–गनेस।

बीनापानि : (हाथ में बीना धारन करे जे), बिसेस अर्थ–सरस्वती।

कपीस : (बन्दर के स्वामी होए जे), बिसेस अर्थ–हनुमान।

सरोज : (सर से उत्पन्न होयल जे), बिसेस अर्थ–कमल।

चक्रपानि : (चक्र हे पानि में जेकर), बिसेस अर्थ–बिस्नु।

एकरंगा : (एक रंग के होए जे), बिसेस अर्थ–सुर्ख लाल कपड़ा।

लाल मुरेठा : (लाल मुरेठा माथा पर रखे से), बिसेस अर्थ–सिपाही।

कठखोद्दी : (काठ खोदे जे), बिसेस अर्थ– पच्छी कठखोदवा।

लकड़सुंघा : (लकड़ी सुंघावे जे), बिसेस अर्थ–बच्चा गायब करे वाला।

कठकरेज : (कठोर करेजा वाला), बिसेस अर्थ–निस्तुर अदमी।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बहुब्रीहि समास के भेद :

अन्य पदार्थ द्वितीया, तृतीया आदि बिभक्ति में रहे के कारन बहुब्रीहि समास के छौ भेद होवऽ हे। **जइसे :**

कर्म (द्वितीया) बहुब्रीहि : मोदकप्रिय अर्थात (लड्डू हे प्रिय जेकरा)

करन (तृतीया) बहुब्रीहि : कृतकार्य (कैल गेल हे काम जेकरा द्वारा)

सम्प्रदान (चतुर्थी) बहुब्रीहि : दत्तधन (देल गेल हे धन जेकरा ला)

अपादान (पंचमी) बहुब्रीहि : निर्भय, निडर (भय इया डर निकल गेल जेकरा में से)

सम्बन्ध (सस्ठी) बहुब्रीहि : कनफट्टा (कान फटल हे जेकर अर्थात साधु)

अधिकरन (सप्तमी) बहुब्रीहि : पतझड़ (पत्ता झड़ऽ हे जउन रितु में)

5. द्वन्द्व समास : जउन समास में सब्भे पद प्रधान रहऽ हे, ओकरा 'द्वन्द्व समास' कहल जा हे। ई समास के दुन्नो पद के बीच में 'आउ', 'इया' बिभक्ति छिपल रहऽ हे। **जइसे :** भाई–बहिन, लोटा–डोरी, सीता–राम, धरम–करम, माय–बाप आदि।

द्वन्द्व समास के *तीन भेद* होवऽ हे :

(क) इतरेतर द्वन्द्व : जउन समास के सब्भे 'आउ' समुच्चयबोधक द्वारा जुड़ल होए, बाकि ऊ समुच्चयबोधक के लोप रहे ओकरा 'इतरेतर द्वन्द्व समास' कहल जा हे। **जइसे :** सुख–दु:ख, देवता–राच्छस, भाई–बहिन, कर–कुटुम, घर–परिवार, दाल–भात आदि।

(ख) समाहार द्वन्द्व : जउन समास के सब्भे पद 'आउ' द्वारा जुड़ल रहलो पर, अलग–अलग अस्तित्व न रख के, समूह (समाहार) के बोध करावऽ हे, ओकरा 'समाहार द्वन्द्व समास' कहल जा हे। **जइसे :** अनधन (समृद्धि), साग–रोटी (सादा भोजन) धन–दौलत, नोन–तेल, पोथी–पतरा, कपड़ा–लत्ता, हाथ–गोड़ आदि।

(ग) बैकल्पिक द्वन्द्व : जउन समास के बीच बिकल्पसूचक अब्यय 'या', 'अथवा' आदि छिपल रहे ओकरा बैकल्पिक द्वन्द्व समास कहल जा हे। **जइसे** : लाभ-हानि, जात-परजात, जस-अपजस, धर्म-अधर्म आदि।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

6. अब्ययीभाव समास : जउन समास के पहिला पद अब्यय होय आउ ओकरा से बनल पूरा पद क्रियाबिसेसन जइसन बेवहार में आवे, ओकरा 'अब्ययीभाव समास' कहल जा हे। **जइसे :** हरदिन, प्रतिदिन, घड़ी–घड़ी, हरघड़ी आदि।

अब्यय पद बादो में आवऽ हे। पद के द्विरुक्तियो करके ई समास बनावल जा हे। अब्ययीभाव के *तीनो तरह* के उदाहरन हे :

(क) पहिला पद अब्यय : निडर, निधड़क, अनजाने, हरदिन भरपेट, अबेर, बेकाम, बेखटके आदि।

(ख) आखिरी पद अब्यय : दमभर, आजतक, दिनभर, कलतक आदि।

(ग) द्विरुक्ति : अगिला संग्या के द्विरुक्ति करके भी अब्ययीभाव समास बनावल जा हे। **जइसे :** हाथे–हाथ, कोरे–कोर, भोरे–भोर, दिने–दिन, छने–छन, घरे–घर, पीछे-पीछ, राते–रात, मुँहे–मुँह, कैले–कैल आदि।

अब्यय के द्विरुक्ति से अब्ययीभाव समास बनावल जा हे। **जइसे :** धीरे–धीरे, तेज–तेज, बेर–बेर, तुरते–तुरते, आस्ते–आस्ते, घड़ी–घड़ी आदि।

संधि आउ समास में अंतर

(1) समास में दू पद के जोग होवऽ हे आउ संधि में दूगो बरन के।

(2) समास में पद के प्रत्यय समाप्त कर देवल जाहे। संधि ला दू बरन के मेल बिकार के गुँजाइस रहऽ हे जबकि समास के इ मेल इया बिकार से कोई मतलब न हे।

(3) संधि के तोड़ल के बिच्छेद कहल जाहे, जबकि समास के बिग्रह होवऽ हे। **जइसे :** 'पीताम्बर' में दू पद हे पीत आउ अम्बर। संधि बिच्छेद होवत – पीत + अम्बर। जबकि समास बिग्रह होवत 'पीत जे अम्बर' इया 'पीत हे जेकर अम्बर – पीताम्बर।

पुनरुक्ति

पुनरुक्त सबद : जब एक्के सबद दू बार आवे इया एक सार्थक सबद के साथे दूसर समानुप्रास इया निरर्थक सबद आवे, तो अइसन सबद के पुनरुक्त सबद कहल जा हे।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जइसे :

दिन–दिन, कौड़ी–कौड़ी, खट–पट, पास–पास, घर–घर, मन–मन, पूछ–ताछ, घर–बार आदि।

पुनरुक्त शब्द ***तीन प्रकार*** के होवऽ हे :

1. **पूर्न पुनरुक्त** 2. **अपूर्न पुनरुक्त** 3. **अनुकरन वाचक**

1. पूर्न पुनरुक्त : जब एक्के सार्थक सबद दोहरावल जा हे, तऽ ओकरा पूर्न पुनरुक्त कहल जा हे। **जइसे :**चलित–चलित, आवित–आवित, खाते–खाते, हँसते–हँसते, दउड़ते–दउड़ते आदि।

पूर्न पुनरुक्त सबद के कुछ आउ उदाहरन हे :

संग्या : दिने–दिने मोटा रहल हे। बूँद–बूँद से तालाब भरऽ हे। हँसी–हँसी में निखेली हो गेल।

सर्बनाम : जे–जे कहलन, से–से पूरा कयलन। अप्पन–अप्पन हठ पर अड़ल हथ।

बिसेसन : हरियर–हरियर पत्ता सोहावन लगऽ हे। लाल–लाल साड़ी सोहागिन पहिनऽ हे।

क्रिया : चलित–चलित थक गेली। हँसते–हँसते पेट फूल गेल।

क्रियाबिसेसन : धीरे–धीरे चलऽ। कहियो–कहियो आ जइहऽ।

बिस्मयादिबोधक: राम–राम! ई का कयलऽ! हाय–हाय! सब्भे दूध गिर गेल!

2. अपूर्न पुनरुक्त– अपूर्न पुनरुक्त सबद दू सार्थक इया दू निरर्थक इया एक सार्थक आउ एक निरर्थक सबद के जोग से बनऽ हे। **जइसे :**

(क) दू सार्थक सबद के मेल से :

संग्या : काम–धाम, धरम–करम, बात–चीत आदि।

सर्बनाम : ई–ऊ, जे–से।

बिसेसन : लँगड़ा–लूला, भोला–भाला, हरा–भरा।

क्रिया : देखना–सुनना, गाना–बजाना, रोना–धोना।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

(ख) सार्थक सबद आउ निरर्थक सबद के मेल से :

संग्या : अटर–पटर, चट–पट, खट–पट, भीड़–भाड़, पूछ–ताछ आदि।

सर्बनाम : अपन–उपन, कुछ–उछ, कोई–ओई।

बिसेसन : पीला–उला, हरियर–उरियर, ठीक–ठाक, कान–कोतर।

क्रिया : लिखना–उखना, खाना–उना, पढ़ना–उढ़ना, उठना–बइठना।

अब्यय : सामने–उमने, पास–उस आदि।

(3) अनुकरनवाचक :

संग्या : चट–चट, खट–खट, भन–भन, सन–सन, दन–दन।

बिसेसन : भरभरिया, लटपटिया, खटपटिया।

क्रिया : फुसफुसाना, झनझनाना, हिनहिनाना।

क्रियाबिसेसन : धड़–धड़, घर–घर, झट–झट।

अनर्गल सबद : हिगर–दिगर, अंट–संट, लबड़धोंधो, टाँय–टाँय फिस।

अभ्यास के प्रस्न

1. उपसर्ग केकरा कहल जा हे? एकर बिसेसता लिखऽ।
2. नीचे लिखल उपसर्ग से दू–दू सबद बनावऽ।
   (क) उन (ख) सु (ग) स (घ) कु (ङ) अप (च) परा (छ) अल (ज) दर
3. कृत् प्रत्यय आउ तद्धित प्रत्यय के अंतर के उदाहरन सहित समझावऽ।
4. कृदन्त प्रत्यय केकरा कहल जा हे? पाँच उदाहरन दऽ।
5. तद्धित प्रत्यय के परिभासा देइत पाँच उदाहरन लिखऽ।
6. समास के उदाहरन सहित परिभासा दऽ। एकर मुख्य भेद बतावऽ।
7. तत्पुरुस समास केकरा कहल जा हे। एकर भेद के बरनन करऽ।
8. कर्मधारय समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
9. द्वन्द्व समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
10. बहुब्रीहि समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
11. अब्ययीभाव समास केकरा कहल जा हे? दस उदाहरन दऽ।
12. संधि आउ समास में का अंतर होवऽ हे? बरनन करऽ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सबद आउ ओकर अर्थ

सबद उ स्वतंत्र आउ सार्थक ध्वनि के कहल जाहे, जे एक इया अधिक बरन के मेल से बनऽ हे। **जइसे** : तूँ, ऊ, हम, अमरूद, आम आदि।

सबद दू प्रकार के होवऽ हे :

सार्थक आउ निरर्थक

सार्थक : सार्थक ऊ सबद के संग्या हे जेकर कुछ अर्थ हो हे। **जइसे** : आदमी, देवता, दया, धरम, करम आदि।

निरर्थक : निरर्थक ऊ सबद के संग्या हे जेकर कोई अर्थ न हो हे। **जइसे** : ईम, लक, निर, धक, दख, आदि।

भासा इया बेआकरन में जब हम सबद के परयोग करऽ ही तब ओकर मतलब सार्थक सबद ही हो हे। सबद आउ अर्थ एक दूसरा से अटूट रूप में जुड़ल रहऽ हे। अर्थहीन भासा के कोई महत्व न हो हे। कोई भासा के सबदकोस सार्थक सबद से ही बनऽ हे।

अर्थ के बिचार से मगही में कई एक तरह के सबद प्रचलित हे। इनका में से कुछ मुख्य सबद तालिका नीचे लिखल सीर्सक में देवल जा रहल हे। पर्यायवाची सबद, बिपरीतार्थक सबद, एकार्थक सबद, अनेकार्थक सबद उन्नार्थक सबद, अनेक सबद ला एक सबद, श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद, सहरू सबद आदि।

पर्यायवाची सबद

अमृत	:	अमरित, इमरित, सुधा
अर्द्धाँगिनी	:	घरनी, औरत, पत्नी, तिरिया, जोरू, गृहिनी
आँख	:	नैन, आँख, लोचन
आग	:	आगि, अग्नि, पावक, अनल
अस्व	:	घोड़ा, हय, तुरंग

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

असुर	:	राच्छस, दैत्य, देव, दानव
अकास	:	असमान, गगन
आवास	:	घर, गेह, गृह, धाम, भवन, वास
इन्द्र	:	महेन्द्र, इन्दर, देवराज, मेघवाहन, सुरपति, सुरेन्द्र
आनन्द	:	हरख, खुसी, सुख
कपड़ा	:	पट, पटोर, चीर, वस्त्र
किताब	:	पोथी, पुस्तक, खाता
किरन	:	किरन, धूप, रस्मि
क्रोध	:	कोप, रोस, गुस्सा, तामस
खग	:	पच्छी, चिड़िया, पंछी, पखेरू, बिहग
चतुरानन	:	पितामह, बिधि, बिधाता, प्रजापति
सागर	:	जलधि, सागर, समुन्दर, सिन्धु, रत्नाकर
पयोधर	:	मेघ, बादल, घटा, मेह, बादर, बदरी, हथिया
अरन्य	:	जंगल, बन, कानन,
कोयल	:	कोकिल, कोइलर, कोइली, कोइल
गनेस	:	गौरीनंदन, लम्बोदर
ज्योति	:	छवि, जोत, चमक, दुति, प्रकास
दास	:	चाकर, नौकर, सेवक
पवन	:	बेयार, बात, वायु
धरती	:	भूमि, भुइयाँ, जमीन, भू, बसुधा, वसुन्धरा
पुत्री	:	बेटी, कन्या, लड़की, सुता, मञा, बच्ची
भवानी	:	पार्वती, गौरी, गउरा, सती, उमा, शैलसुता, शिवा
मधुकर	:	भौंरा, भृंग, मधुप, भँवरा
जमलोक	:	नरक, जमपुर, जहन्नुम
सूरज	:	आदित्य, सूर्य, भानु, दीनानाथ
बिस्नु	:	नारायन, केसव, माधव, गोविन्द, लछमीपति

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सरोबर	:	तलाब, सर, जलासय
धन	:	सम्पत्ति, दौलत, सम्पदा
मछली	:	माछ, मीन
रजनी	:	रात, रात्रि, रैन
बान	:	तीर, सर
सरस्वती	:	वीणापाणि, सारदा, बानी, वाक, भासा
पत्थर	:	पाहन, पाषाण, प्रस्तर
पुत्र	:	बेटा, सुत, पूत, लड़का, बच्चा
बालू	:	रेत, सैकत
राजा	:	भूप, नरेस, निरिप, भूपति
महागौरी	:	दुरगा, काली, कुमारी, चन्डी
रजनी	:	रात, रात्रि, रैन
गाछ	:	बिरिछ, तरु, पेड़
लछमी	:	रमा, श्री, बिस्नुप्रिया, कमला, हरिप्रिया
सिव	:	शंभु, शंकर, महादेव, भोला, नीलकंठ
सर्प	:	साँप, नाग, फनि, भुजंग
समुदाय	:	झुंड, संघ, समूह, दल
स्वामी	:	पति, मरद, भतार, घरवाला
सोना	:	कनक, सुबरन, कंचन, हेम
पगड़ी	:	मुरेठा, नेठो, बिठो
जेब	:	बगली, धोकड़ी, जेबी
ढक्कन	:	ठेंपी, खोंपी
जानवर	:	गोरू, ढोर, डांगर,

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बिपरीतार्थक सबद

सबद		बिपरीतार्थक सबद
असली	:	नकली
अंतर्मुखी	:	बहिर्मुखी
अर्थ	:	अनर्थ
अंधकार	:	प्रकास
अमावस्या	:	पूर्निमा
अतिवृस्टि	:	अनावृस्टि
अपमान	:	सम्मान
अच्छा	:	बुरा
अधम	:	उत्तम
अनुकूल	:	प्रतिकूल
अमरित	:	बिस
आग	:	पानी
धरती	:	असमान
आत्मा	:	परमात्मा
आदर	:	निरादर
आगत	:	अनागत
आरोही	:	अवरोही
आयात	:	निर्यात
आज्ञा	:	अवज्ञा
आदि	:	अंत
आय	:	ब्यय
अजादी	:	गुलामी
आधुनिक	:	प्राचीन
आवस्यक	:	अनावस्यक

सबद		बिपरीतार्थक सबद
आगत	:	अनागत
ईदगीर	:	मुहर्रम
उदय	:	अस्त
उधार	:	नगद
उत्तम	:	अधम
उन्नति	:	अवनति
ऊँचा	:	नीचा
उचित	:	अनुचित
एड़ी	:	चोटी
एकता	:	अनेकता
कठिन	:	सरल
कठोर	:	कोमल
कायर	:	निडर
कपूत	:	सपूत
खरीद	:	बिक्री
खुसी	:	गम
गीला	:	सूखा
गरीब	:	अमीर
गरम	:	ठंडा
गुन	:	अवगुन
ग्रस्त	:	मुक्त
घर	:	बाहर
घिरिना	:	परेम
घटिया	:	बढ़िया

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सबद		बिपरीतारथक सबद
चिर	:	नवीन, अचिर
चोर	:	साधु
चिरंतन	:	नस्वर
उतार	:	चढ़ाव
छोटा	:	बड़ा
छूत	:	अछूत
जाड़ा	:	गरमी
जोड़	:	घटाव
जनम	:	मरन, मिरतु
जीत	:	हार
जल	:	स्थल
ज्योति	:	तिमिर, तम
अकास	:	पताल
जीवित	:	मृत
जिन्दा	:	मरल
झगड़ा	:	मिलाप
झूठ	:	सच
झोपड़ी	:	महल
तेज	:	मंद, धीमा
अहदी	:	फरहर
जगल	:	सुतल
असली	:	नकली
अउरत	:	मरद
मेहरारू	:	मरदाना
न्याय	:	अन्याय

सबद		बिपरीतारथक सबद
फायदा	:	नुकसान
निडर	:	डरपोक
नेकी	:	बदी
पंडित	:	मूर्ख
प्रसंसा	:	निंदा
पुरस्कार	:	दंड
प्रकट	:	गुप्त
सुबह	:	सांझ
पच्छ	:	बिपच्छ
सुरू	:	अंत
बाढ़	:	सूखा
बालक	:	बूढ़ा
भारी	:	हल्का
भला	:	बुरा
भोगी	:	जोगी
मिलन	:	बिरह, बिछुरन
आदमी	:	राच्छस
महान	:	सधारन
मीठा	:	तीता
सभ्य	:	असभ्य
भाग्य	:	अभाग्य
साकाहारी	:	मांसाहारी
विजय	:	पराजय
सांति	:	असांति
शुक्ल	:	कृष्ण

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सबद		बिपरीतार्थक सबद
सत्रु	:	मित्र
सोसन	:	पोसन
सूखा	:	गीला
संजोग	:	बियोग
सुलभ	:	दुर्लभ
सुख	:	दु:ख
स्वामी	:	सेवक
साफ	:	गंदा
सम्मान	:	अपमान
सुंदर	:	कुरूप
सच्चा	:	झूठा
समर्थन	:	बिरोध
सबल	:	निर्बल
स्त्री	:	पुरुस

सबद		बिपरीतार्थक सबद
स्वतंत्र	:	परतंत्र
संकल्प	:	बिकल्प
सार्थक	:	निरर्थक
हद	:	बेहद
क्षमता	:	अक्षमता
हानि	:	लाभ
हिंसा	:	अहिंसा
हँसना	:	रोना
सजीव	:	निर्जीव
सुगंध	:	दुर्गंध
सफल	:	बिफल
सार्थक	:	निरर्थक
क्षणिक	:	शाश्वत

एकार्थक सब्द

अग्यान : जेकरा ग्यान न होए
मूरख : बुद्धिहीन
मूढ़ : जड़मति
अमूल्य : जउन बस्तु के मूल्य न आंकल जा सके।
अनमोल : जउन बस्तु के मोल लगाना संभव न होए
बहुमूल्य : जउन वस्तु के मूल्य बहुत होए
अहंकार : अपना के उचित से जादे समझेवाला
अभिमान : अप्पन बड़प्पन के गलत बोध
दर्प : अपना के श्रेष्ठ आउ अन्य के छोटा बुझे के भाव
घमंड : अपना के वास्तविक स्थिति से अधिक समझ के मगरूर रहे ओला

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अपराध	:	कानून के दृस्टि में गलत काम
पाप	:	नैतिक दृस्टि से गलत काम
अनुकम्पा	:	अतिसय किरपा
अनुभव	:	बेवहारिक जीवन से प्राप्त ग्यान
मन	:	संकल्प करे वाला
बुद्धि	:	बिचार करे वाला
चित्त	:	स्मरन रखेवाला
अप्राप्य	:	जे प्राप्त न कयल जा सके
आधि	:	मानसिक कस्ट
ब्याधि	:	सारीरिक कस्ट
अनाचार	:	अनुचित आचरन
स्वागत	:	सभ्यता आउ प्रथा के अनुसार सिस्टाचार ला कयल गेल सम्मान
उपयोग	:	सुन्दर ढंग से काम में लाना
स्पर्द्धा	:	प्राप्ति के बिकलता दूसर के उन्नति देख के खुद उन्नति करे के इच्छा
किरपा	:	छोटा के प्रति दया भाव
दया	:	दूसर के प्रति करुना भाव
करुना	:	दूसर के दु:ख में कातर भाव से हितकामना
काल	:	समय, यम
समय	:	काल के कोई निस्चित अवधि
खेद	:	अप्पन गलती के कारन मानसिक कस्ट
छोभ	:	असफलता के कारन झुँझलाहट
दुख	:	हिरदय में होवे वाला कस्ट
बिसाद	:	दुखी मन के बेदना
सोक	:	प्रियजन के निधन से उत्पन्न दु:ख

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

गर्व	:	अप्पन श्रेस्ठता के बोध
गौरव	:	अप्पन देस के महत्ता के बोध
चित्त	:	सहज ग्यान वाला चेतन
मन	:	संकल्प-बिकल्प से जुड़ल बुद्धि
आत्मा	:	सरीर में जीवन के सत्ता
अन्तः करन	:	भीतरी मन के बिसुद्ध सक्ति
चेस्टा	:	अच्छा काम ला सक्रिय होना
प्रयास	:	कोई काम ला जतन करना
प्रयत्न	:	कोई काम ला समन्वित प्रयास करना
तट	:	सरोवर इया समुद्र के किनारा
पुलिन	:	जल से निकलल भूमि खंड
कछार	:	तटीय भूभाग
दछ	:	सारीरिक जोग्यता वाला
निपुन	:	ग्यान जन्य जोग्यता वाला
कुसल	:	सारीरिक-मानसिक जोग्यता से भरल
वायु	:	साधारन हवा
पवन	:	लगातार बहेवाला
बतास	:	ठहर-ठहर के झोंका के रूप में चले ओला हवा
समीर	:	मंद गति वाला हवा
मलय पवन	:	सुगन्धित सीतल हवा
झंझावात	:	बारिस के झोंका के साथ तेज झकझोर चले वाला हवा
तूफान	:	प्रबल बेग से नाचते चलेवाला समूह वायु
आँधी	:	गर्दा से भरल भारी हहराइत बेग वाला वायु

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अनेकार्थक सबद

अर्क	:	इन्द्र, सूर्य, रस, काढ़ा, अकवन
अर्ज	:	उपार्जन, लाभ, बिनती, प्रार्थना
अज	:	बकरा, अजन्मा, दसरथ के पिता, ब्रह्मा, मेसरासि
अर्थ	:	मतलब, तात्पर्य, धन, कारन, लिए, प्रयोजन
अछर	:	ईस्वर, बरन, सनातन, अकास, धरम, बिस्नु
अम्बर	:	अकास, कपड़ा, राच्छस-बिसेस
अन्तर	:	फरक, मध्य, अवकास, बाधा, भीतर, हिरदय, भेद
अरब	:	देस बिसेस, घोड़ा, सौ करोड़
अचल	:	पक्का, परबत, स्थिर
अनंत	:	अकास, अंतहीन, असीम, अछय, तछक, बिस्नु
अमर	:	देवता, जे न मरे, बटबिरिछ
अमरित	:	अमर, औसधि, इन्द्र जल, दूध, पारा, सुबरन
अरुण	:	लाल, कुंकुम, सूर्य, सारथी
अहि	:	कस्ट, साँप, सूर्य
आम	:	आम, दुःख, पीड़ा, मामूली, रसाल, सर्बसाधारन
आराम	:	बिस्राम, बगीचा
उत्तर	:	दिसाबिसेस, उतारा, जबाब, हल
कटाछ	:	आछेप, तिरछा नजर, ब्यंग्य
करन	:	कुन्ती पुत्र, दानी, कान
कर	:	किरन, हाथ, सूँढ़, राजस्व
कनक	:	पलास, सोना, धतूरा, नागकेसर, गेहूँ, खजूर
कला	:	अंस, कौसल
कसरत	:	अधिकता, बेयाम
कृस्न	:	भगवान, काला, राधा नागर
कल	:	सुन्दर, अगला दिन, चैन, जंत्र, बोझ
करम	:	कर्म, भाग्य, कृपा

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

कद	:	बादल, हठ, ईर्स्या, डील-डौल
कमला	:	लछमी, सुन्दरी, एगो कीड़ा
काम	:	इच्छा, काज, कामदेव
कुसल	:	चतुर, निपुन, कुस लावेवाला, कुसल-मंगल
केतन	:	घर, कार्य, ध्वजा
केतु	:	ग्रह बिसेस, ध्वजा, पुच्छल तारा
केवल	:	मात्र, बिसुद्ध ग्यान
कैरव	:	कमल, कुमुद
कोट	:	किला, बख्र बिसेस
खग	:	राच्छस, पछी, आकास चारी
खैर	:	कत्था, कुसल
गति	:	चाल, मोच्छ, हालत
गुन	:	कौसल, डोरी, लाभ, सोभाव, सत-रज-तम (तिरगुन)
गुरु	:	भारी, सिच्छक, स्रेस्ठ, बड़ा, बृहस्पति ग्रह
जाल	:	किरन, फरेब, फाँस, धोखा,
तात	:	पिता, भाई, मित्र, स्रेस्ठ, पूज्य, प्रिय
तारा	:	देबी, नच्छत्र, पुतली, बालिका
ताल	:	कठताल, ताड़, दलदल, भूमि, पोखर, स्वर
दाम	:	मूल्य, जाल, फंदा, रस्सी, मालां
द्विज	:	चन्द्रमा, गनेस, पछी, ब्राह्मण, छत्रिय, बैस्य
दंड	:	डंटा, दंडवत, सजा
धन	:	सम्पत्ति, जोड़
धर्म	:	कर्तब्य, गुन, प्रकृति, सोभाव, सम्प्रदाय
धान्य	:	अन्न, धान
नकुल	:	जानवर बिसेस, चौथा पांडव
नाना	:	बिबिध, माता के पिता, पोदीना
पोत	:	नाव, बस्त्र, सोभाव

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बल	:	सक्ति, सेना, बलराम
बलि	:	उपहार, कर, बलिदान
बहार	:	आनंद, चहचही, बसंत रितु, एक राग,
भूत	:	परानी, परेत, बीतल समय, पृथ्वी
मल	:	पाप, मैल, बिकार
रस	:	पारा, जल, नवरस, परेम, सवाद, षड्रस
राग	:	परेम, ईर्स्या, द्वेस, रंग, लय
लवन	:	नमक, नोन, खार
लोक	:	संसार, स्त्री, समूह
बर्न	:	रंग, अच्छर, जाति
वार	:	दिन, प्रहार, आघात
बाज	:	घी, अन्न
वास	:	घर, सुगन्ध, बस्त्र

उन्नार्थक सबद

सबद	:	उन्नार्थक सबद	सबद	:	उन्नार्थक सबद
आम	:	अमौरी	कुटी	:	कुटिया
आँगन	:	अँगनई	चूहा	:	चुहिया
अँगूठा	:	अँगूठी	चमचा	:	चमची
आँत	:	अँतरी	छूरा	:	छूरी
कुरता	:	कुरती	छाता	:	छतरी
कटोरा	:	कटोरी	जूता	:	जूती
कलसा	:	कलसी	चक्का	:	चक्की
केवाड़	:	केवाड़ी	छाता	:	छतरी
कंगन	:	कंगनी	जूता	:	जूती
कोठा	:	कोठरी	चक्का	:	चक्की
खाज	:	खुजली	छाता	:	छतरी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सबद	:	उन्नार्थक सबद
झण्डा	:	झण्डी
झोला	:	झोली
टीका	:	टिकुली
टाँग	:	टँगड़ी
टोप	:	टोपी
ठठेरा	:	ठठेरी
डोला	:	डोली
डोल	:	डोलची

सबद	:	उन्नार्थक सबद
ढकना	:	ढकनी
थाल	:	थाली
नथ	:	नथुनी
नाला	:	नाली
पलंग	:	पलंगड़ी
पंख	:	पँखुड़ी
बहु	:	बहुरिया
रस्सा	:	रस्सी

अनेक सबद ला एक सबद

अनेक सबद	:	एक सबद
जे न मरे	:	अमर
जे कभी बूढ़ा न होए	:	अजर
जेकर कोई सहारा न होए	:	अनाथ
जे मेहमान अचानक आ जाए	:	अतिथि
जेकर मूल्य न आँकल जा सके	:	अनमोल
जे असंभव होए	:	असंभव
जे अचानक घटल होए	:	अनचीतल
जेकर समान दूसर न होए	:	अद्वितीय
जे भोरे होए	:	अनमुँहे
जेकरा में प्रवेस संभव न होए	:	अगम
आम के फूटल गुठली	:	अमोला
जेकर कोई नाथ न होए	:	अनाथ
कम खाए वाला	:	अल्पहारी
कानून के बिरूद्ध	:	अबैध
जेकरा आसक्ति न होए	:	अनासक्त

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जे पढ़े योग्य न होए	:	अपठनीय
जेकर पेट न भरे	:	हहिया
जे लीक पर न रहे	:	अलीक
अइसन बात जे पसंद न कयल जाए	:	अनकठ्ठल
ईस्वर में बिस्वास करे वाला	:	आस्तिक
जे प्रमान से सिद्ध न होए	:	अप्रमानिक
जउन भेदल न जा सके	:	अभेद्य
जउन सैनिक घोड़ा पर सवार होए	:	अस्वारोही
जउन ई लोक में न पावल जाए	:	अलौकिक
जे लुप्त हो गेल	:	अलोप
दुबिधा भरल स्थिति	:	असमंजस
जेकर पति मर गेल होए	:	राँड़
जेकर माय–बाप मर गेल होए	:	टुअर
पीछे–पीछे चले वाला	:	पिछलगुआ
जेकर बिआह न होल हे	:	बाँड़, बंड
जेकरा बाल–बच्चा न भेल होए	:	बाँझ
दूध देवे ओला गाय–भइँस	:	लगहर
दूध देवल बंद कर देवे ओला पसु	:	बिसुखल
समय से पहले मृत्यु	:	अकाल मउअत
केवल अप्पन बारे में सोचेवाला	:	एकसिरताह
कुंज में बिहार करे ओला	:	कुंज बिहारी
कठोर हृदयवाला	:	कठकरेज
जेकरा पइसा खर्च करे में आँख लगे	:	किरिपन
नदी के किनारा	:	कछार
समय से पहिले गर्भ खराब होना	:	कच्चा डाँढ़
बिना तर्क के बहस	:	कठदलील

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पोला बाँस	:	खोंखर
असमान में बिचरे वाला	:	गगनचर
गर्भवती मादा जानवर	:	गाभिन
दुसर के चुगली करे ओला	:	चुगलखोर
हर खाद्य पदार्थ चाट जाए ओला	:	चटोर
लाज से पानी होयल	:	ठिसुआयल
खूब बढ़ा-चढ़ा के बोले वाला	:	डिंगाहा
भारी बखेरा	:	तितिम्मा
बार-बार कहला पर भी न माने ओला	:	थेथर
बिद्रुप चेहरा रखेओला	:	घोघरमुहाँ
खूब तेज लाल रंग	:	टुह-टुह लाल
बीच में बोले वाला	:	बतकट
ठोकर लगावेवाला	:	ठेंसाहा
दुबिधा में पार होना	:	धरम धक्का
अप्पन पेट पूजा में मगन रहे ओला	:	पेटमधवा
गलत राह पर चले ओला	:	बेराह
ब्यर्थ के बात बनावे ओला	:	बतबनौना
जेकरा भात में जादे रूचि रहे हे	:	भतखउका
जेतना सक्ति होए	:	भरसक्ति
बेहद कम बुद्धि वाला	:	भुच्चड़
जेकर बाल बच्चा न हे	:	निरबंसा
लजालु स्वभाव के	:	लजकोकड़
बहुत झगड़ा करे वाला	:	मुँहजोर
बहुत खुसामद भरल	:	मुँह देखल
लम्बा व्यक्ति	:	लमहर
लाख रुपया के स्वामी	:	लखपति
हठ करे ओला	:	हठी
स्वजाति से सम्बद्धता के प्रतीक	:	हुक्का पानी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद

अँगना	:	आँगन
अंगना	:	स्त्री
अंश	:	हिस्सा
अंस	:	कंधा
अनल	:	आग
अनिल	:	हवा
अनु	:	पीछे
अणु	:	कण, एटम
अभिराम	:	सुंदर
अविराम	:	लगातार
अरि	:	सत्रु
अरी	:	स्त्री के लिए सम्बोधन
अवधि	:	समय
अवधी	:	अवध प्रदेश के एगो भासा
असन	:	भोजन
आसन	:	बइठे के बस्तु
अगम	:	दुर्लभ
आगम	:	प्राप्ति
अध्ययन	:	पढ़ना
अध्यापन	:	पढ़ाना
अलि	:	भँवरा
अली	:	सखी
अनत	:	सीधा
अनति	:	अहंकार
अधम	:	नीच
अधर्म	:	पाप
इत्र	:	सुगंध
इतर	:	दूसरा
उपकार	:	भलाई
अपकार	:	बुराई
ऋत	:	सत्य
ऋतु	:	मौसम
इड़ा	:	पृथ्वी
ईड़ा	:	स्तुति
इति	:	समाप्ति
ईति	:	सस्य, बिहन
इंदु	:	चनरमा
इंदुर	:	चूहा
आकर	:	खान
आकार	:	सूरत, सक्ल
आदि	:	आरम्भ
आदी	:	अदरक
आधि	:	मानसिक कस्ट
आरति	:	दुःख
आरती	:	देवता के धूप–दीप दिखाना
आली	:	सखी
अलि	:	भौंरा
आस्तिक	:	जेकरा ईस्वर में आस्था हे
आस्तीक	:	एक रिसि
अधम	:	नीच
अधर्म	:	पाप
इत्र	:	सुगंध
इत्तर	:	दूसरा

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उपकार	:	भलाई	कपीस	:	सुग्रीव या बाली बानर के राजा
अपकार	:	बुराई			
उद्‌भव	:	उत्पत्ति	कलि	:	कलजुग
उद्धव	:	कृष्ण के सखा	कली	:	अधखिला फूल
उपसना	:	दुर्गंध होना	कीश	:	बंदर, चिड़िया, सूरज
उपासना	:	पूजा	कीस	:	गर्भ के थैला
उपवास	:	भोजन न करना	कुट	:	किला
उपहास	:	निंदा	कूट	:	पहाड़ के चोटी
कंकाल	:	हड्डी के ठठरी	कुल	:	सब, बंस
कंगाल	:	भिखारी	कूल	:	किनारा
कंजर	:	नीच पुरुस	क्रिया	:	काम
कुंजर	:	हाथी	किरिया	:	कसम
कपिस	:	भूरा			

सहचर सबद

कभी–कभी अइसनो सबद मिलऽ हे, जे अधिकतर अनायास भाव से साथ–साथ परयोग में आवऽ हे। ओकरा 'सहचर सबद' कहल जा हे। जइसे—करनी–धरनी, किरिया–करम, चाल–चलन, जप–तप, आगा–पीछा, आस–पास, अन–धन, घर–दुआर, कुल–परिवार, काम–काज, जनम–मरन, जइसन–तइसन, झूठ–सच, ताक–झाँक, दान–पुन्न, हाथ–गोड़, राह–बाट, बाजा–गाजा, मेल–जोल, साँझ–सबेरे आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. नीचे लिखल सबद के दू-दू गो पर्यायवाची सबद बतावऽ :
   अमृत, आँख, सूरज, सरोवर, गनेस, आग, पुत्री, धरती।
2. नीचे लिखल सबद के बिपरीतार्थक सबद बतावऽ :
   अन्धकार, अनुकूल, धरती, कपूत, आदि, सुबह, ज्योति।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

3. नीचे लिखल सबद के अनके सबद ला एक सबद बतावऽ :
जे न मरे, जब भोर हो जाय, जेकर कोई नाथ न होवे, पीछे-पीछे चले वाला, जेकर पति मर गेल हे, जेकर माय-बाप मर गेल हे।

4. नीचे लिखल सबद के श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद बतावऽ :
आदी, आदि, अँगना, अंगना, अंश, अंस, अनु, अणु, कंकाल, कंगाल, कुल, कूल।

5. पाँच गो सहचर सबद बतावऽ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)